P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन

श्याम सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

किरण पारीक
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर,
शिक्षा महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

मनुष्य अपने जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक समायोजन के आधार पर जीवन व्यतीत करता है। वह अपने प्रत्येक कार्य में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में समायोजन को स्थान देता है। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं वातावरणीय परिस्थितियों में संतुलन बैठाकर जीवन जीते हैं और वर्तमान जीवन प्रक्रिया से सन्तुष्ट रहते हैं, वे व्यक्ति समायोजित व्यक्ति कहलाते हैं तथा उनका मानसिक स्वास्थ्य सन्तुलित एवम् अच्छा कहलाता है। एक ही विद्यालय की एक ही कक्षा में पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर विद्यार्थियों में भिन्नता पायी जाती है। विद्यार्थियों के इन आपसी सम्बन्धों के आधार पर कक्षा का स्वरूप निर्धारित होता है। एक ही कक्षा के विद्यार्थियों में एक–दूसरे के प्रति आकर्षण या अलगाव की प्रवृत्ति पायी जाती है। ऐसे विद्यार्थी जिन्हें कक्षा के अधिकांश सदस्य पसन्द करते हैं, उनसे मित्रता करना चाहते हैं तथा उनकी प्रशंसा करते हैं, नायक विद्यार्थी कहलाते हैं। एक विद्यार्थी किसी विद्यार्थी विशेष के प्रति प्रबल आकर्षण रखता है अथवा विरोधी भावना होती है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक विद्यार्थी एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थी समायोजन की दृष्टि से समान होते हैं।

मुख्य शब्द : नायक विद्यार्थी, समायोजन।

प्रस्तावना

वंशानुक्रम तथा वातावरण के अलावा एक महत्त्वपूर्ण घटक और भी है जो बालक की शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित करता है; वह है – बालक का परिवार। परिवार में दी गई शिक्षा का बालक के जीवन पर प्रभाव पड़ता है – यह अनुसंधान सिद्ध तथ्य है। वस्तुतः परिवार में प्रदत्त शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा है जो बालक के सम्यक् सर्वांगीण विकास का प्रयास करती है। परिवार से निकलकर बालक व्यवस्थित क्रम में शिक्षा प्राप्त करने हेतु विद्यालय से जुड़ता है। विद्यालय का वातावरण उसके लिए नया तथा परिवार के वातावरण से भिन्न होता है, यहाँ बालक नये व्यक्तियों यथा – अध्यापक, अन्य विद्यार्थी आदि, के सम्पर्क में आता है। वहाँ बालक को समायोजन की आवश्यकता होती है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करता है। बालक के व्यक्तित्व के विकास में माता–पिता, परिवार तथा विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त विद्यालय तथा शिक्षक का भी बालक के विकास का उत्तरदायित्व होता है क्योंकि बालक का अधिकांश समय विद्यालय में ही बीतता है और शिक्षा के द्वारा बालक की क्षमताओं और योग्यताओं का विकास किया जाता है। विद्यालय के अच्छे वातावरण में ही विद्यार्थियों में उचित संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन का विकास होता है।

मनुष्य अपने जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक समायोजन के आधार पर जीवन व्यतीत करता है। वह अपने प्रत्येक कार्य में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में समायोजन को स्थान देता है। वह अपने वजूद को स्थापित करने के लिए वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन करता है। मनुष्य को अपने अस्तित्त्व को बनाये रखने के लिए अपनी परिस्थितियों एवं वातावरण से समायोजन करना पड़ता है। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं वातावरणीय परिस्थितियों में संतुलन बैठाकर जीवन जीते हैं और वर्तमान जीवन प्रक्रिया से सन्तुष्ट रहते हैं, वे व्यक्ति समायोजित व्यक्ति कहलाते हैं तथा उनका मानसिक स्वास्थ्य सन्तुलित एवम् अच्छा कहलाता है।

शिक्षण प्रक्रिया में रत विद्वजन विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं तथा इनकी प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम

क्रियाओं का आयोजन करते हैं। विद्यार्थी द्वारा जिस सीमा तक इन उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया जाता है, वही उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि, बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। है। शैक्षिक उपलब्धियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण परिस्थिति मानी जाती है।

यह भी सत्य है कि जो व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होता है वही अपने वजूद को स्थापित करने के लिए वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन कर पाता है।

शेफर के अनुसार

''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से कोई जीवित प्राणी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली स्थितियों तथा आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करता है।''

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक विद्यार्थी एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का मापन शिक्षण संस्थाओं के लिए छात्राओं की शक्ति का केन्द्र बिन्दु जानने और सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायक हो सकता है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम समायोजन आयाम के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ बडोला, सुनीता (2012) ने ''किशोर छात्रों में चिन्ता समायोजन प्रभाव का संश्लेषणात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों पर नगर एवं गाँव का प्रभाव कम है। तथा नगर एवं गाँव के किशोरों के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

दास, शर्मिष्ठा और बैराग्य, श्यामसुन्दर (2009) ने ''माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में लिंग, अनुदेशन माध्यम, पैतृक व्यवसाय का समायोजन समस्याओं के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन कार्य किया तो पाया कि छात्राएँ घरेलू समायोजन में छात्रों अधिक समायोजित पायी गईं। शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में छात्र व छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अनुदेशन माध्यम के आधार पर छात्र–छात्राओं के घरेलू समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में बंगाली माध्यम के छात्रों से अधिक शैक्षिक समायोजन पाया गया तथा पैतृक व्यवसाय का घरेलू तथा शैक्षिक समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

पंवार, सरिता एवं उनियाल, नारायण प्रसाद (2008) ने ''उच्च प्राथमिक स्तर के बालक बालिकाओं के समायोजन एवं माता पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन किया तो निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि बालक एवं बालिकाओं के विद्यालयी समायोजन में पर्याप्त भिन्नता पायी गई। बालक एवं बालिकाओं के मध्य पारिवारिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सुरेखा (2006) ने ''विद्यार्थी समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन किया तो निष्कर्ष रूप में यह सामने आया कि बालकों के समायोजन में संस्थागत पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण प्रभाव इनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इस समायोजन में अध्यापक एवं माता पिता के सहयोग का भी बालकों के जीवन तथा उनकी समस्याओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

जिम्मरमैन नैन्सी, बी. (2007) ने "प्रतिभाशाली छात्रों के सामाजिक एवं भावात्मक समायोजन का अध्ययन" के निष्कर्ष में पाया कि कुछ प्रतिभाशाली छात्र समायोजन क्षमता रखते हैं परन्तु अन्य के सहयोग के अभाव में समायोजन क्षमता में कमी आती है। अभिभावकों, अध्यापकों एवं विद्यालयी प्रशासन के सहयोग के अभाव में भी प्रतिभाशाली छात्र समायोजन में अक्षम रहते हैं।

जरसील्ड, ए. टी. (2006) ने "महाविद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्त्व के लक्षणों के संदर्भ में समायोजन का अध्ययन" के निष्कर्ष में पाया कि उच्च व निम्न समायोजित समूह में नियंत्रण की अवस्थिति पर असमानताएँ पायी गई। उच्च व निम्न समायोजित समूहों के व्यक्तित्त्व रेखाचित्र समान नहीं पाये गये।

वेली, आर. सी. (2006) ने "प्रतिभाशाली छात्रों की व्यक्तित्त्व भिन्नता एवं समायोजन का अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन किया तो पाया कि प्रतिभावान छात्र पूर्णतया समोयाजित पाये गये। प्रतिभावान छात्रों के साथी भी अध्ययन के प्रति जागरुक पाये गये। प्रतिभावान छात्र विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

मेहदीजेदाह, एन. तथा स्कॉट, जी. (2005) ने "स्कॉटलैण्ड के ईरानी अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन" विषय पर शोध किया और अपने निष्कर्ष में पाया कि आवासीय तथा आर्थिक समस्याएँ छात्रों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव डालती हैं। रोजगार सहायता तथा प्रशासनिक सहयोग समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन

शोध का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

विद्यालय विद्यार्थियों के लिए समायोजन परिसूची : ए. के. पी. सिन्हा एवम् आर. पी. सिंह

शोध न्यादर्श

सारणी – 1

क्र.सं.	नायक विद्यार्थी	योग
1	शहरी नायक	35
2	ग्रामीण एकाकी	65
कुल		100

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. आलोचनात्मक अनुपात अथवा टी–मान

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1.1
(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

नायक विद्यार्थी	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
शहरी	**35**	**28.057**	**9.951**	**2.128**	**0.15**	**98**	**0.070**
ग्रामीण	**65**	**27.907**	**10.515**				

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों की समायोजन परिसूची के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.057 व 27.907 है तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 9.951 व 10.515 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 2.128 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.15 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.070है जो कि 98 स्वतंत्रता के अंश हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.99 से कम है। अतः परिकल्पना–1 स्वीकृत होती है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

यद्यपि शहरी नायक विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक विद्यार्थी एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थी समायोजन की दृष्टि से समान होते हैं। उनके समायोजन स्तर में कोई विशेष एवं सार्थक अन्तर नहीं होता है।

लेखाचित्र संख्या – 1
उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

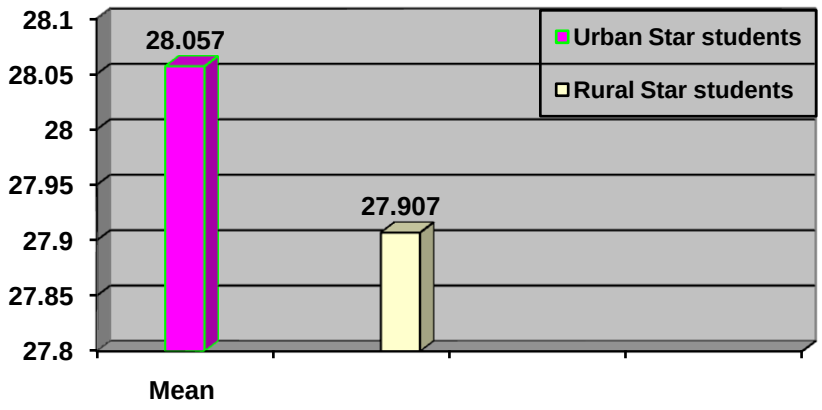

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है।

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों की समायोजन परिसूची के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.057 व 27.907 है, जो कि नगण्य अन्तर है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थी समायोजन स्तर की दृष्टि से समान होते हैं। उनके समायोजन स्तर में विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी नायक एवं ग्रामीण नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

1. नायक विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के अनुरूप शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाये जाने चाहिए।
2. नायक विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में उपस्थित परिवेश आधारित भिन्नता का निवारण किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Das, Sharmistha and Bairagya, Shyamsundar : (Oct-Dec, 2009), Adjustment Problems of Secondary School Students in Relation to their Gender, Medium of Instruction and Parent's Occupation : A Case Study of Malda District. EDUCATIONAL HERALD, Vol. 38, No. 4, pp89-94.*
2. *Manoharan, R. John Louis: (September 2008), Adjustment of B. Ed. Teacher Trainees in Puducherry Region: A Survey. Experiments in Education, Vol. XXXVI, No. 9, pp 215-218.*
3. *Shukla, Sharda and Bhatnagar, Poonam: (July-Sept, 2006), A Study of Adjustment of Male and Female prospective Teachers. EDUCATIONAL HERALD Vol. 35, No. 3, pp 2-5.*
4. *Vazalwar, Chandrashekhar and Padhi, Sambit Kumar: (Oct-Dec, 2009), Problems of Personal and Emotional Adjustment of Teachers : Causes and Remedies. Educational Herald, Vol. 38, No. 4, pp12-19.*
5. *वर्मा, रोशनलाल : (नवम्बर, 2010), अध्यापक और उसका समायोजन, नई शिक्षा, वर्ष–60, अंक–4, pp24–26*
6. *शर्मा, ऊषा : (अक्टूबर, 2008), सतत् एवं दूरस्थ शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों का समायोजन, नई शिक्षा, वर्ष–58, अंक–3, pp18–20*
7. *पाण्डेय, सुधांशु कुमार : वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं के समायोजन का उनकी शिक्षण सक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, (जनवरी–जून, 2011), वर्ष–30, अंक–1, pp63–69*
8. *गुप्ता एवं गुप्ता : (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
9. *गैरेट, एच.ई. : (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
10. *शर्मा, सुरेन्द्र : (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*

Websites

1. *www.eric.ed.gov*
2. *www.scholar.google.com*
3. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*